www.thearyasamaj.org

Vol.7 October 2013 No.4
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदो ऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

www.thearyasamaj.org

वेद रश्मियाँ हम फैलाएँ

–राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

गहन तमिस्रा घनीभूत है,
देखो आज समग्र धरा पर।
फैल रहा अज्ञान-अंधेरा,
निर्भय होकर वसुन्धरा पर।
गहरे तम के अन्धजाल को
क्षत-विक्षत हम आज कराएँ।।

बढ़ी जा रही वृत्ति आसुरी,
मानवता है हुई प्रकम्पित।
नहीं दिखाई देता किञ्चित्,
भाव मनुष्यों में हो परहित।
पर उपकारों के दीपक, हम
जन-जन उर में ज्वलित कराएँ।

प्रेम-दया करुणा की आभा,
अन्तर्मन में हो ज्योतित।
शान्ति-सफलता-समरसता के,
द्वार खुलें फिर जन-जन के हित।
ज्योतिर्मय-सा प्रभा प्रमण्डित
अपना यह संसार बनाएँ।।

सत्य-धर्म की प्रखर मयूखें,
निकलें फिर से ज्योतिष्मान्।
निर्भयता आए युवकों में,
जागे त्याग तथा बलिदान।
अज्ञानान्धकारापहारिणी
वेद रश्मियाँ हम फैलाएँ।।

मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

www.thearyasamaj.org

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editoria! Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan October 2013 Vol. 7 No.4
आश्विन-कार्तिक 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. वेद रश्मियाँ हम फैलाएँ 2
-राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 6
-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. विजयदशमी विजय लाई, हो बधाई! 7
5. भारत के वैज्ञानिकः कपिल मुनि11
-डॉ. भवानीलाल भारतीय
6. जब गाँधी जी सुभाष के मेहमान बने 13
-श्री विश्वास पाटील
7. बापू का गुस्सा 17
-मुकेश शर्मा
8. जब स्व. लाल बहादुर शास्त्री आर्यसमाज के उपदेशक रहे। 18
-स्व. निहालसिंह आर्य
9. शास्त्री जी और चावल 21
-रेनू सैनी
10. आदर्श क्रान्तिकारी-लाला हरदयाल (जन्मदिवस पर विशेष) 22
-आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'
11. Shravani Parva At Arya Samaj 27
C-3 Block, Janakpuri, New Delhi-58
-B.D. Ukhul

www.thearyasamaj.org

संपादकीय

नारी जाति का अपमान कब तक?

मनु ने कहा है - **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"** अर्थात् जिस समाज में नारी जाति का सम्मान होता है, उन्हें आदर-प्रदान किया जाता है वहाँ देवता निवास करते हैं। भारतीय परंपरा में नारी को दुर्गा, शक्ति, लक्ष्मी और सरस्वती की तरह पूजा जाता है। नवरात्र के अवसर पर नौ-दस दिन तक कन्या (कंजकों) का पूजन होता है। गृह प्रवेश और विवाह आदि के प्रसंग में भी कन्याओं के पूजन के बिना धार्मिक कृत्य संपन्न नहीं होते। कभी हमारे देश में गार्गी, मैत्रेयी, कात्यायनी जैसी विदुषियाँ हुईं जिन्होंने ऋषि-मुनियों के साथ गंभीर विषयों पर शास्त्रार्थ किए।

बड़े खेद से कहना पड़ता है कि आज हमारे समाज में वही नारी उपेक्षिता, तिरस्कृता और वासना की वस्तु रह गई है। आज देश के बहुत बड़े क्षेत्र में जन्म से पूर्व ही या ज़न्म लेते ही बेटियों की हत्या कर दी जाती है, उन्हें जीने तक का भी अधिकार नहीं है। जिस देश के ऋषियों ने घोषणा की थी कि वह व्यक्ति पंडित है, जो पर दारा (स्त्री) को माँ के रूप में देखता है वहाँ कहा है-

'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्,
यः पश्यति स पंडितः"।।

उसी भारत देश में प्रतिदिन सैकड़ों बेटियों का यौन शोषण होता है और वे सामूहिक बलात्कार की शिकार होती हैं। हाल ही में दिल्ली में निर्भय बलात्कार कांड और मुंबई में शक्तिमिल बलात्कार कांड की घटनाएँ हुई हैं। इन बहुचर्चित घटनाओं के अलावा भी प्रतिदिन अनगिनत घटनाएँ हो रही हैं जिनका कहीं कोई उल्लेख नहीं होता। फलस्वरूप अपराधियों की खोजबीन भी नहीं होती। इसके अतिरिक्त हमारी कानून व्यवस्था की स्थिति इतनी दूषित है और न्यायप्रक्रिया इतनी ढीली है कि अपराधी बच निकलते हैं और बलात्कार की शिकार महिलाएँ/बच्चियाँ असहाय रह जाती हैं।

www.thearyasamaj.org

नारी जाति अपनी इस दुरवस्था से तंग आकर शक्ति और दुर्गा का रूप धारण कर लें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। आज समाज में कुछ योगभ्रष्ट साधुसन्तों और महन्तों के यौनाचार की चर्चा जोरों पर हैं। जो नारी जाति को अपमानित कर रहे हैं। वे छद्मरूप में करोड़ों की संपत्ति और सैकड़ों आश्रमों के मालिक बने बैठे हैं जहाँ वे आलीशान पाँच सितारा होटलों को भी मात कर देने वाले भवनों का आनंद लेते हुए भोली-भाली लड़कियों को फँसाकर यौन शौषण और बलात्कार में संलिप्त पाए गए हैं। कुछ और भी उद्वेलित करने वाली घटनाएँ प्रकाश में आ रही हैं जहाँ लड़की का बाप और भाई अपनी ही सन्तान और बहन से यौनाचार में लिप्त पाए गए हैं। ऐसी ही घटना अमृतसर में कुछ वर्ष पूर्व घटित हुई थी जहाँ पिता अपनी तीन बेटियों का यौनशोषण करता था। वहाँ बेटियों ने दुर्गा बनकर माँ के सहयोग से पिता की हत्या कर दी। आज ऐसी घटनाओं की संख्या बढ़ रही है। ये मानवता को कलंकित करने वाली पाशविक घटनाएँ हैं।

ऐसी घटनाओं को रोकने और यौनाचार की बढ़ती घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए सरकार को प्रभावी कदम उठाने होंगे, उसके लिए-

1. पुलिस-प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त करना होगा और कानून-व्यवस्था को प्रभावी बनाना होगा। शहरों में पेट्रोलिंग को प्रभावी और सबल बनाना होगा।
2. यौन शोषण के मामलों को निपटाने के लिए न्यायप्रक्रिया को आशु प्रभावी बनाना होगा।
3. मानवाधिकार संगठनों को सक्रिय करना होगा।
4. महिला कल्याण समितियों की स्थापना और सरकार को उन्हें यौन शोषण के मामलों में दखल देने के विशेष अधिकार देने होंगे।
5. शिक्षा संस्थाओं में नैतिक शिक्षा को आरंभ से ही सम्मिलित किया जाए जिसमें नारी जाति के प्रति सम्मान की भावना पैदा की जाए। माता संसार को जन्म देती है उसका आदर मानव का कर्तव्य है।

संपादक

www.thearyasamaj.org

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-71)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

सूत्रकार ऊपर कहे हुए दोष का उपयुक्त समाधान निम्नलिखित सूत्र में करता है- सूत्र है-

अविवेकाद्वा तत् सिद्धेः कर्त्तुः फलावगमः।।71।।

अर्थ- (अविवेकात् वा) अथवा अविवेक से (पूर्व किए हुए कर्मों के अनुसार) (तत् सिद्धेः) जगत् की सिद्धि (उत्पत्ति) होने के कारण (कर्तुः) करने वाले (कर्ता) को (फलावगमः) फल की प्राप्ति होती है।

भावार्थ- आत्मा में कर्तृव्य, भोक्तृत्व आदि की सिद्धि अविवेक के कारण होती है। शुद्ध, चेतन आत्मा अविवेक के कारण ऐसी अवस्था (बद्ध अवस्था) में आ जाती है जहाँ कर्तृत्व, भोक्तृत्व आदि का अस्तित्व उसमें स्वीकार किया जाता है जो तत्वज्ञान होने पर नहीं रहता। अविवेक क्या है? चेतन और अचेतन के वास्तविक भेद को न समझना। जब कोई जीवात्मा इस अवस्था में होता है तब वह धर्म-अधर्म आदि स्वीकृत कर्मों के अनुसार जन्म-मरण के निरन्तर चक्र में पड़ा रहता है। सामूहिक रूप से जीवात्माओं के ये कर्म सृष्टि रचना में सहायक होते हैं क्योंकि आत्माओं के भोग संपादन के लिए इस जगत की रचना हुई है। इसलिए यह आवश्यक है कि वह उनके भोग के अनुकूल हो। इस अनुकूलता के नियमन में भी जीवात्माओं के कर्म सहायक हैं। इस प्रकार जगत् की उत्पत्ति में अन्य निमित्तों के समान जीवात्माओं का अविवेक भी एक निमित्त है। इसलिए फल की प्राप्ति या भोग कर्ता को है, इसमें सन्देह नहीं। बुद्धि आदि अन्तःकरणों से लेकर जितना विश्व है, वह सब जीवात्माओं के भोग का साधन या विषय है, यह स्पष्ट हो जाता है। इस सबकी विशेष रचना में जीवात्माओं द्वारा किए कर्म और अविवेक सहायक हैं। इसलिए जीवात्माओं का फलोपभोग अपने किए कर्मों का परिणाम होने से कर्ता को ही भोग की प्राप्ति होती है।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी, नई दिल्ली-10058

www.thearyasamaj.org

विजयदशमी विजय लाई, हो बधाई!

विजयदशमी (दशहरा) क्षत्रियों का पर्व है, वैसे ही जैसे श्रावणी ब्राह्मणों का और दीपावली वैश्यों का। क्षत्रिय वे हैं जो युद्ध करते हैं; शत्रु को हरा कर विजय प्राप्त करते हैं, या फिर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं और देश की रक्षा करते हैं।

रक्षस् और राक्षस

क्षत्रिय और गुंडे में अन्तर है। क्षत्रिय रक्षस् होता है और गुंडा राक्षस। रक्षस् का अर्थ है रक्षक जो रक्षस् धर्म से भटक जाये, वो राक्षस बन जाता है।

रक्षस् और राक्षस, दोनों तभी से विद्यमान हैं, जब से मनुष्य ने पृथ्वी पर जन्म लिया है। देव और असुर मनुष्य के अन्दर ही प्रविष्ट हैं, और दोनों में अविराम युद्ध चल रहा है। त्रेता युग में राम और रावण में युद्ध हुआ। द्वापर में पांडवों और कौरवों में युद्ध हुआ। अब भी देवासुर संग्राम जारी है। भारत-पाकिस्तान युद्ध उसी का एक रूप है।

परम्परागत कथा के अनुसार विजय दशमी के दिन राम ने रावण का वध किया था। यह उस एक लम्बे संघर्ष की परिणति थी, जिसमें लंका के समृद्ध और शक्तिशाली योद्धाओं ने देवों, दानवों और मानवों को हराकर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। भारत के दक्षिणी भाग में दंडकवन तक उनका शासन था और वे समय-समय पर उत्तर भारत में भी छापे मारते रहते थे। ऐसे दुर्दान्त शत्रुओं पर विजय त्याग और तपस्या के बिना नहीं पाई जा सकती थी।

त्याग और तप से शक्ति

राम ने राज्य त्याग दिया। वन में जाकर शून्य से शुरू करके अपनी नई शक्ति बनाई। वह जन साधारण में घुल-मिल गये और वे उनके अपने बन गये। जब उन्हें लगा कि पाँव जम गये हैं, तब उन्होंने रावण से विरोध मोल ले लिया। रावण की बहन शूर्पनखा प्रेम प्रस्ताव लेकर आई थी। यदि राम चाहते, तो शूर्पनखा से विवाह करके सुख से जीवन बिता सकते थे। सीता भी साथ रह सकती थी। आखिर दशरथ की भी तीन रानियाँ थीं।

परन्तु वह अन्याय और अत्याचार से समझौता करना होता।

www.thearyasamaj.org

वह आज की भाषा में भ्रष्टाचार और घोटालों से समझौता करना होता। वह उन विद्याव्यसनी, जनसेवकों (ऋषि-मुनियों) की उपेक्षा होती, जो राक्षसों के हाथों पीड़ित हो रहे थे।

सुख-सुविधा नहीं, तप

क्षत्रिय का मार्ग सुख-सुविधा से जीने का मार्ग नहीं होता। वह संघर्ष और तप का मार्ग नहीं होता है। तप वह अद्‌भुत भावना है, जिससे कष्ट कष्ट नहीं रहता; कष्ट ही आनन्द बन जाता है। कोई दौड़ जीतने का इच्छुक नित्य पाँच-दस किलोमीटर की दौड़ लगाता है; यह साधना है, तप है। यों पाँच किलोमीटर दौड़ना पड़े, तो वह सज़ा है; परन्तु साधक को इस तप में आनन्द आता है। क्षत्रिय को युद्ध में उतरते समय पता होता है कि चोट लगेगी, घाव होंगे, मृत्यु भी हो सकती है; परन्तु उनकी उसे परवाह नहीं होती। यह तप का जादू है।

क्षत्रिय का धर्म

राम क्षत्रिय थे -केवल क्षत्रिय। उनका एक ही धर्म था-दस्यु से पीड़ित की रक्षा करना। शूर्पनखा का तिरस्कार करके उन्होंने रावण की, समूचे राक्षस कुल की शत्रुता मोल ले ली। राक्षसों की शक्ति बहुत अधिक होती है। सामान्य व्यक्ति से कई गुना अधिक शक्ति प्रदर्शित कर सकते हैं। यह राम को तब समझ आया, जब पंचवटी की कुटिया से सीता का अपहरण कर लिया गया।

सीता हरण रामायण का वह मर्मस्पर्शी स्थल है, जहाँ राम एकदम असहाय हो जाते हैं। जिस सीता के कारण उनका वनवास भी नन्दन-कानन वास बना हुआ था, वह भी उनसे छिन गया। सीता विहीन पंचवटी की वह सूनी कुटिया उनके लिए सबसे बड़ी यातना बन गई। उनकी शक्ति मानों छिन गई। वह शोक सागर में डूब गये।

कवि ने वहाँ लक्ष्मण को उनके साथ रखा है। यदि लक्ष्मण साथ न होते, तो रामायण की कहानी क्या होती, कुछ कहा नहीं जा सकता। एक और एक ग्यारह होते हैं, यह राम और लक्ष्मण के विषय में सत्य सिद्ध हुआ।

शोक का आवेग घटते ही राम में क्षत्रियोचित रोष जागृत हुआ। किसने सीता का अपहरण किया है, यह जानने से पहले

www.thearyasamaj.org

ही उन्होंने संकल्प किया, कि उसका समूल नाश करना है। वन में भटकते हुए, जटायु से उन्हें पता चला कि यह करतूत रावण की है। शत्रु प्रबल है, यह जान कर राम ने हिम्मत नहीं हारी। नदी में पानी बढ़ जाने पर भी नाव उसमें डूबती नहीं है। रावण जैसे विश्वजयी शत्रु को हराने के लिए बहुत शक्ति संचित करनी पड़ेगी, इतना ही राम ने सोचा।

दुर्बल का साथ दो

इस संसार में सब कुछ विद्यमान है। उसे अपने उपयोग के लिए समय पर ढूँढ निकालना ही सफलता का गुर है। किष्किन्धा के वन-पर्वतों में वानर और ऋक्ष लोग निवास करते थे। ये वनवासी जातियाँ पराक्रमी और कष्ट सहिष्णु थीं। राम ने उन्हें अपने पक्ष में किया। बाली और सुग्रीव के कलह में उन्होंने दुर्बल और पीड़ित का साथ दिया। बाली का साथ देने में सुविधा हो सकती थी। परन्तु राम के विचार में सुविधा का मार्ग गलत होता। राम और बाली के समझौते में बाली प्रमुख रहता। राम और सुग्रीव के समझौते में राम प्रमुख रहे; सुग्रीव उनका सहायक बना।

राम ने बाली के पुत्र अंगद को उचित सम्मान दिलाया और उसका भी समर्थन प्राप्त किया। हनुमान, जाम्बवन्त, नल, नील जैसे निष्ठावान वीरों और कारीगरों की सहायता उन्हें मिली। लंका तक पहुँचने के लिए समुद्र पर पुल बनाया गया, जैसा उससे पहले कभी नहीं बना था। राक्षसों की सेना जहाजों और विमानों से लंका से बाहर आती थी; वानरों की सेना पुल को पार करके लंका में पहुँची।

यह रावण के लिए बड़ी चेतावनी थी। उसका प्रताप घट गया था। कहाँ तो शत्रु उसके डर से अपना घर छोड़ कर भागते थे, कहाँ दो निर्वासित राजकुमार वनवासियों की सेना बना कर राक्षसों की अजेय राजधानी में घुस रहे थे।

पापी से समझौता नहीं

राम का निश्चय था कि रावण से सन्धि किसी दशा में नहीं करनी है। पाप के साथ और पापी के साथ समझौता करना आर्यों के धर्म और नीति के विरुद्ध है। फिर भी लोकमत को अपने पक्ष में करने के लिए उन्होंने रावण के पास शान्ति दूत

www.thearyasamaj.org

भेजे। पहले हनुमान ने, उसके बाद अंगद ने रावण की राजसभा में जा कर प्रस्ताव रखा कि रावण विनम्रतापूर्वक सीता को श्रीराम को वापस कर दे, तो युद्ध टल सकता है और सोने की लंका बच सकती है। उन्हें पता था कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं होगा। परन्तु उस दशा में युद्ध से होने वाले विनाश की जिम्मेदारी रावण की होगी।

रावण तो अहंकार का पुतला था। सबके सिर उसने झुकाये थे; वह अपना सिर झुकाने को कैसे तैयार होता? वह सीता को लौटा देता, तो वह रावण ही न होता।

परिणाम यह हुआ कि युद्ध हुआ। दोनों पक्षों की शक्ति संतुलित थी, जैसा कि अधिकांश युद्धों में होता है। युद्ध होते ही तब हैं, जब दोनों पक्ष स्वयं को अधिक शक्तिशाली समझाते हैं। कई अवसर ऐसे आये, जब लगा कि राक्षसों की जीत हो जायेगी। परन्तु राम ने न धैर्य छोड़ा, न आशा। अनेक राक्षस योद्धा मारे गये। कुम्भकर्ण, मेघनाद भी मारे गये। रावण भी युद्ध में लड़ते हुए मारा गया।

धर्म कुटुम्ब से बड़ा

कुम्भकर्ण और विभीषण दोनों रावण के भाई थे। कुम्भकर्ण मानता था कि सीताहरण करके रावण ने गलती की है। परन्तु उसकी दृष्टि में न्याय और औचित्य की अपेक्षा परिवार सम्बन्ध का अधिक महत्व है। इसके विपरीत विभीषण परिवार सम्बन्ध की अपेक्षा धर्म और औचित्य को अधिक बड़ा मानता था।

जो लोग विभीषण को 'घर का भेदी' मान कर उसकी निन्दा और तिरस्कार करते हैं, वे भूल करते हैं। दुर्जन भाई-बन्धुओं से सहयोग करना उन्हें विनाश के मुँह में धकेलना है।

युद्ध में राम की विजय हुई। वह चाहते तो लंका को अपने अधीन रख सकते थे। परन्तु राम को धन और धरती का लोभ नहीं था। जितनी आसानी से उन्होंने अयोध्या का राज्य भरत के लिए छोड़ दिया था, उतनी ही आसानी से उन्होंने लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया और अयोध्या लौट आए।

अयोध्या में बड़ी धूमधाम से उनका, राज्याभिषेक हुआ और इस दिन वहाँ खुशी में दीपमालाएँ सजाई गईं और दीपावली मनाई गई।

www.thearyasamaj.org

भारत के वैज्ञानिक दार्शनिकः सांख्यदर्शन के प्रर्वत्तक–कपिल मुनि

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

सांख्यदर्शन के प्रवक्ता महर्षि कपिल को संसार का प्रथम दार्शनिक माना जाता है। भागवतपुराण में कपिल मुनि के जीवन तथा सिद्धान्तों पर विस्तार से लिखा गया है। इनके पिता का नाम ऋषि कर्दम तथा माता का नाम देवहूति उल्लिखित है। सांख्य–शास्त्र की परम्परा कपिल से आविर्भूत होकर आगे चली। इसमें आगे आने वाले दार्शनिकों में आसुरि, पंचशिख, जैगीषव्य आदि के नाम आते हैं। सांख्यदर्शन मूलरूप से चेतन सत्ता तथा अचेतन सत्ता के भेद को लेकर चलता है। चेतन को पुरुष तथा अचेतन (जड़) को प्रकृति नाम से पुकारा गया है। चेतन पुरुष भी दो प्रकार के हैं। सत् चित् तथा आनन्द रूप अनादि अनन्त चेतन पुरुष परमात्मा (ईश्वर) है जब कि अल्पज्ञ, अल्पशक्ति वाला शरीर तथा देशकाल की सीमा में बँधा चेतन जीवात्मा कहलाता है।

कालान्तर में सांख्यदर्शन की एक शाखा अनीश्वरवादी बन गई तथा उसमें ईश्वर के अस्तित्व को नकार दिया गया। इसके विपरीत सेश्वर सांख्य के प्रस्तोताओं ने ईश्वर को मान्य किया। गीता में भी सांख्य का प्रवचन मिलता है। यहाँ परमात्मा को उत्तमपुरुष कहा गया है।

सांख्यदर्शन के अनुसार संसार पच्चीस तत्वों से संयुक्त है। जड़ प्रकृति जो इस विश्व का उपादान कारण है। त्रिगुणात्मिका (सत्व, रज तथा तम युक्त) है। परमात्मा के सन्निध्य या ईक्षण (इच्छा) से इसमें विकार उत्पन्न होता है जो आगे भौतिक जगत् का रूप लेता है। तीनों गुणों की साम्यावस्था ही प्रकृति है। यह आगे **महत्तत्त्व**, उससे अहंकार, तथा आगे पञ्चतन्मात्रा, एकादश इन्द्रियों के रूप में उद्भूत होते हैं। तन्मात्राओं से **पृथ्वी**, **जल**, अग्नि, वायु और आकाश नामक पञ्च महाभूत जन्म लेते हैं और इन भूत पदार्थों से दृश्यमान

www.thearyasamaj.org

जगत अस्तित्व में आता है। इन चौबीस तत्वों के साथ पच्चीसवें चेतन (परमात्मा-जीवात्मा) पुरुष की गणना होती है। सांख्य शास्त्र के दार्शनिक पक्ष तथा इसके प्रवक्ता दाशनिकों का विस्तृत एवं तथ्यात्मक इतिहास पं. उदयवीर शास्त्री ने लिखा है। इसमें इस दर्शन की प्राचीनता तथा पूर्ववर्ती एवं परवर्ती आचार्यों के योगदान की चर्चा के साथ-साथ इस दर्शन के महत्व का विवेचन किया गया है।

जब निरीश्वर सांख्य का प्रवर्तन हुआ तो यह माना जाने लगा कि प्रचलित षडध्यायी सांख्य जो कपिल रचित माना जाता है, वह प्राचीन नहीं है। इस विचारधारा में ईश्वरकृष्ण रचित सांख्य कारिका को सांख्य का प्राचीन ग्रन्थ कहा गया तथा प्रचारित किया गया कि इन कारिकाओं का आधार लेकर ही षडध्यायी कापिल सांख्य की रचना हुई है। उदयवीर शास्त्री ने सप्रमाण सिद्ध किया कि वस्तुतः सांख्य के कपिल रचित सूत्र ही प्राचीन हैं और अनीश्वरवाद का समर्थन करने वाली सांख्य सप्तति परवती है। सांख्य को अनीश्वरवादी सिद्ध करने के प्रकरण को दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में उठाया तथा 'ईश्वरासिद्धेः', 'प्रमाणभावान्न तत्सिद्धिः' आदि सूत्रों का वास्तविक अर्थ सिद्ध किया और बताया कि सांख्य में ईश्वर को सृष्टि का उपादान कारण मानने का निषेध है, उसके अस्तित्व से इन्कार नहीं। सांख्यदर्शन सत्कार्मवाद में विश्वास रखता है। सृष्टि अपने वर्तमान रूप में (व्यक्तावस्था) आने से पहले कारण रूप में (सूक्ष्म अवस्था में) विद्यमान रहती है। मृत्तिका रूपी सत् पदार्थ के कारण ही उसका कार्य रूपी घट (घड़ा) परिवर्तित होकर हमारे सामने आता है। सांख्यदर्शन का प्रस्तावित सूत्र कहता है कि त्रिविध दुःखों (अधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक) की अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त (चरम) पुरुषार्थ है और यह अत्यन्त निवृत्ति पुरुष (जीव, ब्रह्म तथा प्रकृति) के यथार्थ ज्ञान से होती है।

3/4 शंकर कालानी श्रीगंगानगर

www.thearyasamaj.org

जब गाँधी जी सुभाष के मेहमान बने

-श्री विश्वास पाटील

कलकत्ते में बोस परिवार के दो मकान थे-एक ऐल्गिन रोड वाला और दूसरा बुडबर्न पार्क वाला। सन् 1937 में एक बार महात्मा गाँधी बुडबर्न पार्क वाले मकान में बोस परिवार के अतिथि बन कर रहे थे।

हुआ यह कि कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक बुडबर्न पार्क में होनी तय हुई थी। जवाहरलाल नेहरु भी, जो सुभाष के घनिष्ठ मित्र थे, अपनी बहिन विजयलक्ष्मी के साथ इसी घर में ठहरे हुए थे।

घर के मुखिया सुभाष के बड़े भाई शरद् बोस थे। उनकी पत्नी विभावती घर का सारा प्रबन्ध संभाल रही थीं। गाँधी जी उनके घर आ कर ठहरेंगें, इस कल्पना से सारा परिवार आनन्द विभोर हो रहा था। इतने महापुरुष की पदधूलि पड़ने से यह घर धन्य हो जायेगा।

मकान की दूसरी मंजिल गाँधी जी के लिए खाली करके भली-भांति संवार दी गई थी। गाँधी जी की सेवा-शुश्रूषा में तिल भर की कमी न रह जाये, इसलिए उनके भक्तजनों से भलीभाँति पूछताछ कर ली गई थी कि गाँधी जी को क्या कुछ रुचता है और क्या नापसंद है। यों तो सभी भारतीय अतिथि सत्कारी होते हैं, परन्तु बंगाली कुछ अधिक ही भावुक होते हैं। यथासंभव गाँधी जी कस्तूरबा के साथ मोटर से वहाँ पहुँचे। पूरे परिवार ने आतुरता से उनका स्वागत किया। गाँधी जी ने बड़ी आत्मीयता से सबको नमस्कार और प्यार किया। सुभाष की माँ से हालचाल पूछा। कस्तूरबा माँ से बात करती रहीं।

गाँधी जी के साथ उनके निजी सचिव महादेव देसाई, डॉ. सुशीला नैयर, प्यारेलाल और कनु गाँधी की टोली थी। ये प्रायः उनके साथ रहते थे। इस टोली ने छानबीन शुरू की कि गाँधी जी के लिए सब सुविधाएँ जुटा दी गई हैं या नहीं। गाँधी जी सुख-सुविधाओं के लिए जितने लापरवाह दिख रहे थे, उतने ही अधिक ये सब लोग चिन्तित और बैचैन थे। उनकी माँगों और तगादों का अन्त नहीं था। यह चाहिए, वह चाहिए;

www.thearyasamaj.org

यह कमी रह गई आदि आदि।
विभावती ने अपनी ओर से बहुत कुछ सामान मँगवाया था। अब महादेव भाई ने एक और लम्बी सूची दी : हरी सब्जियाँ, भिगोई हुई मूँग, केले, शकरकन्द, छुहारे, मक्खन और भी न जाने क्या क्या। बच्चे हँसने लगे; यह तो पूरा बाजार ही खरीद लाना होगा।
विभावती ने कहा : 'किस समय क्या कुछ बनेगा, यह एक दिन पहले पता चल जाये, तो सुविधा रहेगी।'
'मुश्किल है। उन्हें कब क्या रुचेगा, उनके सिवाय किसी को मालूम नहीं।'
'और हाँ, बापू को बकरी का दूध चाहिए। उसका क्या होगा?'
'हमें मालूम है। उसका इन्तजाम हमने कर लिया है', विभावती ने आश्वस्त स्वर में कहा।
'पहले से निकला दूध नहीं। बकरी को मेरे सामने दुहा जायेगा', महादेव भाई ने कहा।
'तो बकरी को ही यहाँ मँगवा लें।'?
'एक नहीं, आठ दस बकरियाँ। जिस किसी बकरी से काम नहीं चलेगा', महादेव भाई बोले।
शरद् बोस को लगा कि गाँधी जी का रहन-सहन सादा चाहे जितना दिखता हो, सस्ता हरगिज़ नहीं है।
शाम हुई तो लोगों की भीड़ जमा होने लगी। लोग गाँधी जी की जयकार करते हुए उनसे दर्शन देने के लिए बाहर आने की प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना का समय हुआ, तो फाटक खोल कर भीड़ को भीतर आने दिया गया।
पहले गाँधी जी ने एक छोटा-सा भाषण दिया। उसके बाद रामधुन गाई गई, जिसमें 'ईश्वर, अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान' पंक्ति जोड़ दी गई थी।
सेठ घनश्याम दास बिड़ला गाँधी जी से मिलने आये। उनका न केवल गाँधी जी से अतिशय प्रेम था, अपितु गाँधी जी के सभी सहयोगियों से घनिष्ठ परिचय था। उन्होंने महादेव भाई को उलाहना दिया : 'क्या हमारी महल जैसी कोठी पसन्द नहीं आई, जो यहाँ आ टिके?'

www.thearyasamaj.org

गाँधी जी के पुत्र देवदास गाँधी जी बिड़ला जी के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' अखबार में सम्पादक थे। अतः बिड़ला जी का गाँधी-जी पर हक बनता था। महादेव भाई ने बात को टालने के लिए कहा : 'यह प्रोग्राम तो कई महीने पहले बन गया था।' बिड़ला जी को सन्तोष नहीं हुआ; बोलेः 'मेरे यहाँ सेवा में कुछ कमी रह जाती थी क्या?'

महादेव भाई ने कुछ उत्तर नहीं दिया। गाँधी जी को बिड़ला जी से आर्थिक सहायता मिलती रहती थी, यह उन्हें मालूम था। दुधारू गाय की तो लात भी सहनी पड़ती है।

गाँधी जी से मिलकर लौटते समय बिड़ला जी ने महादेव भाई से फिर कहा : 'अब यहाँ आ ही गये हो, तो ठहरो। लेकिन परसों सब सामान ले कर हमारे यहाँ चले आना।'

गाँधी जी की प्रार्थना सुबह शाम दोनों समय होती थी। सवेरे लोगों ने मुँह-अंधेरे ही भीड़ करके शोर मचाना शुरू कर दिया। खूब रौनक रही।

प्रार्थना के बाद एक गड़रिया अपनी भेड़े लेकर आया। उसकी भेड़ों मे से महादेव भाई ने एक स्वस्थ, सतेज भेड़ चुनी। उसका दूध महादेव भाई के सामने दुहा गया।

गाँधी जी की कुछ और भी रुचियाँ थीं। वह रोटी कनु के हाथ की बनाई हुई खाते थे।

वह पेडू और सिर पर मिट्टी की पट्टी रखते थे। उसके लिए चार छह किलोमीटर दूर नदी के पास से नरम चिकनी मिट्टी मँगाई गई। यह काम सुभाष की दो भतीजियों, इला और मीरा, ने किया।

सुभाष को आगामी अधिवेशन में कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने की बात थी। आन्ध्र के ऐन. जी. रंगा और बिहार के स्वामी सहजानन्द इस आशय का प्रस्ताव लेकर गाँधी से मिले। आचार्य कृपलानी सुभाष को पसंद नहीं करते थे। गाँधी इन लोगों के प्रस्ताव को स्वीकार न कर लें, इस डर से कृपलानी रात में ही गाँधी जी से मिलने आ पहुँचे। गाँधी जी ने उनसे कुछ उत्साहजनक चर्चा नहीं की, इसलिए वह सोने के लिए बिड़ला भवन चले गये।

www.thearyasamaj.org

एक प्रसंग कुछ अप्रिय-सा हो उठा। गाँधी जी भोजन करने बैठे थे कि उसी समय घनश्यामदास बिड़ला आ गये। गाँधी जी ने उनसे भी भोजन करने का अनुरोध किया। बिड़ला जी भी भोजन करने गाँधी जी के साथ ही बैठ गये। जिस समय विभावती कुछ परोस रही थीं, उसी समय बिड़ला जी ने गाँधी जी से कुछ कहा। कहा तो उन्होंने इस ढंग से था कि वह विभावती के कानों में न पड़े, पर विभावती ने वह सुन लिया और वह खिन्न होकर तुरन्त कमरे से बाहर निकल गईं। शरद् बोस सबके साथ बैठे भोजन कर रहे थे। जब विभावती दुबारा कुछ परोसने नहीं आईं, तो उठ कर वह रसोई में गये। विभावती की आँखों में आँसू थे। पूछने पर विभावती ने बताया कि बिड़ला जी ने गाँधी जी से यह पूछा था : 'आपको लगता है कि ये सब्जियाँ ताज़ी है?'

अगले दिन बिड़ला जी देवदास जी के साथ फिर बुडबर्न पार्क आये। देवदास जी ने गाँधी जी से कहा : 'बापू, अब आपको बिड़ला भवन चलना चाहिए।'

जवाहरलाल नेहरू भी वहाँ आये। उन्होंने पूछाः 'क्यों?'

देवदास जी चकरा गये। वह समझ रहे थे वह एकान्त में गाँधी जी से बात कर रहे हैं। अचकचा कर उन्होंने कहा : 'मेरा मतलब था कि वहाँ डाक्टर वगैरह की सहूलियत रहेगी।'

नेहरु जी ने हँसते हुए कहा : 'बिड़ला जी ने क्या कोई ऐसा कानून पास करवा लिया है कि गाँधी जी जब भी कलकत्ता आयेंगे, बिड़ला भवन में ही ठहरेंगें?

सुन कर गाँधी जी भी हँसने लगे। वह बिड़ला भवन नहीं गये। एक बार मौका देख कर माँ प्रभावती ने गाँधी जी से कहा : 'बापू जी हमारे इस सुभाष पर भी दया दृष्टि बनाये रखना।'

गाँधी जी ने हँसते हुए कहा : 'इसके लिए उसे क्रान्तिकारियों का साथ छोड़ना होगा'।

'सबसे बड़े क्रान्तिकारी तो आप हैं, सुभाष ने तपाक से कहा। बात तब हँसी में समाप्त हो गई। पर बात बहुत गहरी थी। सुभाष को गाँधी जी का साथ छोड़ना ही पड़ा।

'महानायक' से साभार

www.thearyasamaj.org

बापू का गुस्सा

-मुकेश शर्मा

उन दिनों गाँधी जी चंपारण में थे। एक सुबह वह अपनी कुटिया के बाहर बैठकर चरखा कात रहे थे। उनके सामने दो बच्चे खेलते-खेलते एकाएक लड़ने लगे। वे दोनों इतने उत्तेजित हो गए कि एक-दूसरे को भद्दी गालियाँ देने लगे। उन छोटे बच्चों के मुहँ से गालियाँ सुनकर गाँधीजी को बेहद अफसोस हुआ। उन्होंने आसपास के लोगों से उन दोनों के माँ-बाप के बारे में पता किया। फिर उन्होंने एक दिन उनके माता-पिता को बुला भेजा। वे लोग आश्चर्यचकित भी हुए और खुश भी कि उन्हें बापू ने बुलाया है। वे गाँधीजी के पास पहुँचे। गाँधीजी ने उन्हें डाँटना शुरू कर दिया। बच्चों के माँ-बाप घबराए। वे सिर झुकाए, खामोशी से सब कुछ सुनते रहे। लेकिन एक बच्चे के पिता से रहा नहीं गया। उसने पूछा - बापू क्षमा करें। हम समझ नहीं पा रहे कि हमसे क्या गलती हो गई है? गाँधीजी ने स्थिति स्पष्ट की-सुनो। तुम लोगों के बच्चे यहाँ खेल रहे थे। अचानक उनमें झगड़ा हो गया और वे एक-दूसरे को गाली देने लगे। इस पर उस व्यक्ति ने कहा-लेकिन इसके लिए आपने हमें क्यों बुलाया? आप उन्हें बुलाकर डाँट देते। आपको उन्हें डाँटने का पूरा अधिकार है। गाँधीजी बोले-देखो। मैं उन्हें डाँट सकता था। पर तब न जब वे दोषी होते। ये गालियाँ उन्होंने तुम लोगों से ही सीखी होंगी। या कहीं और किसी से भी सीखी हो तो तुम लोगों ने उन्हें सुधारने की कोशिश नहीं की। इसलिए दोषी तुम लोग हुए। डाँट तुम्हें पड़नी चाहिए। यह सुनकर बच्चों के अभिभावकों ने सिर झुका लिया।

अहिंसा की ताकत

जब महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका में थे। वे भारतीयों और अन्य समुदायों के साथ हो रहे भेदभाव का विरोध कर रहे थे। उनकी लोकप्रियता दिनोदिन बढ़ती जा रही थी। इससे कई लोग उनके विरोधी हो गए। कुछ लोग तो उनकी हत्या की साजिश रचने लगे। उनके एक मित्र मिस्टर कैलनबैक को किसी तरह इसका पता लग गया। उन्होंने गाँधीजी से अपनी सुरक्षा को लेकर सचेत रहने को कहा पर गाँधी जी ने इस बात को गंभीरता से नहीं लिया। कैलनबैक परेशान रहने लगे। फिर उन्होंने खुद ही गाँधीजी की सुरक्षा करने का फैसला किया। वह जेब में पिस्तौल लेकर चलने लगे। गाँधीजी को इसका पता चल गया। उन्होंने कैलनबैक को बुलाकर कहा-आप मेरी रक्षा नहीं कर सकते। जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अनिवार्य है। दूसरी बात यह है कि आत्मा अमर है, इसे कोई मार नहीं सकता। इसलिए उसे रक्षा की क्या आवश्यकता है? तीसरी बात यह कि किसी की भी रक्षा हिंसा के साधनों से करना अनुचित है। मेरे पास तो अहिंसा की ताकत है फिर मैं क्यों डरूँ। इस बात से कैलनबैक बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पिस्तौल लेकर चलना छोड़ दिया।

त्रिलोक चंद जैन

www.thearyasamaj.org

जब स्व. लाल बहादुर शास्त्री आर्यसमाज के उपदेशक रहे

(2 अक्तूबर जन्म दिवस पर)

-स्व. निहालसिंह आर्य

स्वतन्त्र भारत के दूसरे बहुप्रतिष्ठित प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री मृदुभाषी, धैर्यवान, लगनशील, कर्मठ, राष्ट्र के एक ईमानदार कर्णधार थे। उन्होंने भारतवर्ष की प्राचीन नगरी काशी के पास मुगलसराय में 2 अक्तूबर 1904 ई. में जन्म लेकर अपने धर्मात्मा पिता-माता श्री शारदा प्रसाद अध्यापक तथा रामदुलारी देवी के नाम को अमर किया। शैशव काल में इनके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने से उनका बचपन तथा शिक्षा-दीक्षा बहुत निर्धनता, अभावों तथा कष्टों में हुई। आपने आरम्भिक शिक्षा वाराणसी के हरिश्चन्द्र विद्यालय से प्राप्त की और केवल 17 वर्ष की अल्पावस्था में ही सन् 1921 में महात्मा गाँधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन के तीस हजार स्वदेश भक्त सत्याग्रहियों के साथ ढाई वर्ष तक जेल में रहे।

यद्यपि उनके मन में उच्च शिक्षा प्राप्ति की उत्कृष्ट इच्छा थी, इसलिए उसकी पूर्ति के लिए स्वदेश भक्तों द्वारा काशी में खोले गये राष्ट्रीय विद्यालय काशी विद्यापीठ में भारतीय संस्कृति की पद्धति से बहुत कठिन परिश्रम सतत लगन से 1925 में प्रथम श्रेणी में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। उन दिनों महर्षि दयानन्द द्वारा 1875ई. में बम्बई में खोले गए आर्यसमाज का प्रचार कार्य जोरों पर था। देशभक्त उच्चकोटि के आर्यजन भी स्वतन्त्रता आन्दोलन के ऐसे सत्याग्रहों में भाग लेने लग गए थे। 1906ई. में कुटिल शासक अंग्रेजों द्वारा बंगाल के दो खण्ड किए जाने से सारे भारत में प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य नेता लाल, बाल, पाल नाम विख्यात थे। पंजाब के वीर वक्ता स्वनाम धन्य लाला लाजपत राय आर्यसमाज की ओर से दलित व अछूतोद्धार सभा के प्रधान थे। उन्होंने शास्त्री जी को भी धर्मनिष्ठ, दयालु, परोपकारी और कर्तव्यपरायण नवयुवक समझकर अपनी सभा में प्रचारक नियुक्त कर लिया।

1826ई. में मुजफ्फरनगर का नया मण्डल बनाया गया था। मुजफ्फरनगर, तहसील बुढ़ाणा तथा शामली के मध्य 84 ग्रामों की बालियाण खाप का सिसौली ग्राम प्रमुख तथा बड़ा होने से वहाँ 1905 से पं. बस्तीराम आर्य भजनोपदेशक ने आर्यसमाज का प्रचार किया, ला. लाजपत राय ने 1923ई. में

www.thearyasamaj.org

इस ग्राम के मध्य में आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास किया था। ला. लाजपतराय की बहन सिसौली के धर्मात्मा धनाढ्य लाला बनवारी लाल के आर्यसमाजी पुत्र रामचन्द्र सहाय से ब्याही थी। बनवारी लाल जी के उस क्षेत्र में तथा कई अन्य नगरों में सैकड़ों भवन बने हुए थे।

श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने 1925ई. से 1928ई. तक तीन वर्ष आर्य उपदेशक के रूप में मुजफ्फरनगर तथा मेरठ मण्डल के बड़े-बड़े ग्रामों, नगरों तथा आर्य-उत्सवों में कर्तव्यनिष्ठा से दलित, अछूतोद्धार का प्रचार किया था। तब इनको 125 रु. वेतन मिलते थे। तब ये हरिजनों (तथाकथित भंगी और चमार कहलाने वाले) को भारत के प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ रामायण और गीता की कथा सुनाया करते थे। वह बहुत ही कोमल वाणी से उत्साह सहित श्लोकों की सुन्दर व्याख्या करते थे। इनका उपदेश भी हृदयग्राही होता था। ग्राम्यजन बहुत श्रद्धा से इनके प्रचार से प्रभावित होकर इनसे स्नेह और सम्मान करते थे। एक बार 1927 में मुजफ्फरनगर के जीमणे ग्राम के आर्यसमाज के महोत्सव में आर्य विद्वानों, ईसाई पादरियों में शास्त्रार्थ हुआ था। आर्यसमाज के अलगूराय शास्त्री, लाल बहादुर शास्त्री, मास्टर कुन्दन लाल कोली जाट (जो वर्तमान सीताराम बाजार दिल्ली के राजपाल शास्त्री के दादा तथा रामपाल शास्त्री के पिता थे) ईसाइयों के पादरी फिरगुणी साहब और पटियाला के पादरी अब्दुलहक थे। पादरी शास्त्रार्थ में हार गए और जीमणे ग्राम के जो चमार बहला-फुसलाकर ईसाई बना लिए थे, वे शास्त्रार्थ में हारे हुए पादरियों के जाल से निकल गए। तो पादरी उनको गाली देने लगे। तब उन हरिजनों ने उस पादरी को खूब पीटा और भगा दिया। ये हरिजन लाल बहादुर शास्त्री के कुशल प्रचार से आर्यसमाजी बन गए थे।

उसी जीमणे ग्राम के पास एक ग्राम भैंसी भी है। वहाँ के तथा आसपास के ग्रामों के दर्शक, श्रोता नर-नारी भी शास्त्रार्थ में आर्यसमाज की जीत से तथा लाल बहादुर शास्त्री के प्रेमी-स्वभाव में बहुत प्रसन्न थे। भैंसी ग्राम के चौधरी तिलकराज की वृद्धा दादी तो लाल बहादुर शास्त्री के लिए एक लोटे में दूध घी-खाण्ड मिलाकर भर लाई और शास्त्री जी के हाथ में लोटा देकर बोली कि बेटा यह दूध का लोटा पी ले और हम तुमको इसी प्रकार दूध ही पिलाया करेंगे। 'तुम रोटी मत खाया करो'। तब मुजफ्फरनगर मण्डल में तीन वर्ष

www.thearyasamaj.org

तक लाल बहादुर शास्त्री वहाँ के ग्रामजनों में बहुत सम्माननीय तथा प्रिय हो गए थे। उन्होंने बहुत-से युवकों तथा हरिजन भाइयों को सन्ध्या-हवन सिखाकर जनेऊ भी दिए थे।

मुजफ्फरनगर के डी.ए.वी. कॉलेज की प्रबन्धकर्तृ सभा ने लाल बहादुर शास्त्री का मासिक वेतन 125 रु. थोड़ा समझ कर मांगेराम आर्य की सहायता से उसी कॉलेज में शास्त्री जी के निवास की व्यवस्था छात्रावास में कर दी। तब उस जाट छात्रावास के प्रबन्धक चौधरी शेरसिंह अच्छे आर्यसमाजी थे। उन्होंने छात्रावास के 90 छात्रों से शास्त्री जी के लिए बारी-बारी घी देना जिम्मे लगा दिया और छात्रावास की ओर से दूध का भी दैनिक प्रबन्ध कर दिया। वे शास्त्री जी से कहने लगे कि आप अपने 125 रु. सारे घर भेज दिया करें। छात्रावास की दुग्ध शाला से एक जाट चौधरी डेरी से आया करता था। शास्त्री जी को उससे एक सेर दैनिक दूध मिलता था।

लाल बहादुर शास्त्री ने दलित अछूतोद्धार सभा लोक सेवा मंडल में आजीवन सदस्यता ग्रहण करके हरिजन उत्थान का बहुत कार्य किया, उनके बच्चों को सबके साथ प्रवेश करवाया। 23 वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने अपने विवाह में अपने श्वसुर से दहेज में केवल एक चर्खा और कुछ गज खादी ही लेना स्वीकार किया। शेष को नकार दिया। उनकी धर्मपत्नी ललिता देवी भी एक आदर्श साध्वी नारी थीं। लालबहादुर शास्त्री जी भारत की राजनीति में उत्तरोत्तर प्रगति करते गए। वे 1937ई. उत्तरप्रदेश कांग्रेस पार्टी के सचिव बने। 1940-41 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के कठिन कष्टों को झेलते हुए एक वर्ष की जेल काटी। घर की हालत बहुत चिन्ताजनक थी। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल गये। 1946ई. में बहुत कुशल रेलमन्त्री बने। 1958 में उद्योग मन्त्री, 1961 ई. में पन्त जी के निधन के पश्चात् गृहमन्त्री बने। 27 मई, 1964 को पं. जवाहरलाल नेहरु के देहान्त के पश्चात् पूरे 18 मास तक भारत के हृदय सम्राट् प्रधानमंत्री बने रहे। इन्होंने 1965 के पाकिस्तान युद्ध में बहुत वीरता का परिचय दिया। युद्ध में पाकिस्तान को हराकर रूस के प्रधानमंत्री श्री कोसीगिन के झाँसे में आकर संधि पर हस्ताक्षर करके 10 जनवरी 1966 को षड्यन्त्र के चक्कर में फंस कर अमर स्वर्गारोही बन गए। आपको शतशः नमन है।

ओ३म् सुप्रभा से साभार

www.thearyasamaj.org

शास्त्री जी और चावल

-रेनू सैनी

यह घटना उस समय की है जब लालबहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री थे। उन दिनों केरल में सूखा पड़ा हुआ था। चावल की खेती पूरी तरह तहस-नहस हो गई थी। लोग चावल के दाने-दाने को तरसने लगे थे। केरल के निवासियों का मुख्य भोजन चावल ही है इसलिए राज्य सरकार चिंतित थी कि केरल निवासी कैसे गुजर-बसर करेंगे? शास्त्री जी भी यह जानकार अत्यंत परेशान थे। उन्होंने केरल सरकार को आश्वासन दिया कि प्रदेश के लिए चावल का उचित प्रबंध किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मेरा संकल्प है कि हर केरलवासी को चावल मिलेगा। बिना चावल के एक भी भाई-बहन भूखा नहीं रहेगा। केरल की जनता को चावल के लिए त्राहि-त्राहि करते देखकर उन्होंने अधिकारियों को चावल की कमी पूरी करने के आदेश दिए। देश के अन्य क्षेत्रों से चावल खरीदकर केरल भेजा जाने लगा। ऐसे में अन्य प्रदेशों में चावल की कमी तो होनी ही थी। शास्त्री जी ने रोटी खा सकने वाले लोगों से अनुरोध किया कि वे चावल का प्रयोग कम से कम करें और जो लोग स्वाद के लिए प्रतिदिन चावल का प्रयोग करते हैं, वे भी इसका प्रयोग अनिवार्य होने पर ही करें। उन्होंने अपने घर में भी सख्त निर्देश दिए थे कि जब तक केरल में चावल की कमी पूरी नहीं हो जाती तब तक उनके घर में भी चावल नहीं पकाए जाएँगे। यह आदेश सुनकर प्रधानमंत्री जी के बच्चे दुखी हुए क्योंकि वे चावल खाने के शौकीन थे। लेकिन सबने शास्त्री जी के आदेश का पालन किया। प्रधानमंत्री निवास में तब तक चावल नहीं बनाए गए जब तक कि केरल की स्थिति पर पूरी तरह से काबू नहीं पा लिया गया। केरल की सरकार व निवासियों के साथ ही पूरा भारत शास्त्री जी की यह बात जानकर उनके प्रति नतमस्तक हो गया कि उन्होंने केरल की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर प्रधानमंत्री निवास तक में चावल बनाने पर रोक लगा दी।

www.thearyasamaj.org

आदर्श क्रान्तिकारी–लाला हरदयाल

(14 अक्तूबर जन्मदिवस पर विशेष)

–आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'

लाला हरदयाल जी एक अद्भुत प्रतिभा के धनी तथा आदर्श क्रान्तिकारी थे। उनका जन्म दिल्ली के श्री गौरी दयाल माथुर जी के यहाँ 14 अक्टूबर, 1874 को हुआ। बचपन में ही हरदयाल जी ने अपनी अद्भुत प्रतिभा के प्रमाण देने आरंभ कर दिए थे। दिल्ली से बी.ए. करने के बाद लाहौर चले गए। लाहौर के गवर्नमैन्ट कालेज में वह एक स्थान पर शतरंज का खेल-खेल रहे थे। खेल शुरू होते ही, एक अन्य छात्र ने घण्टी से टन-टन की आवाजें निकालनी शुरू की। अरबी भाषा के एक जानकार ने एक अरबी की और उसके बाद एक प्राध्यापक ने लेटिन भाषा की कविता सुनाई। उन्हीं पाँच मिनटों में हरदयाल को गणित का एक सवाल हल करने के लिए दिया गया। बीस वर्षीय हरदयाल जी ने अपने सहपाठी को मात देने के साथ-साथ गणित का सवाल भी हल कर दिया, कितनी बार घण्टी की टन-टन हुई, यह भी बता दिया तथा अरबी और लेटिन की कविताएँ भी ज्यों-की-त्यों सुना दीं। लाहौर कॉलेज से उन्होंने अंग्रेजी भाषा और साहित्य में एम. ए. केवल एक ही वर्ष में पूरा कर लिया और वह भी 97 प्रतिशत अंक लेकर तथा यूनिवसिर्टी में प्रथम स्थान प्राप्त करके। उनकी उत्तर-पुस्तिका देखकर परीक्षकों ने कहा कि – 'इस विद्यार्थी को आगे पढ़ाने केलिए हमारे पास कुछ भी नहीं है।' उनकी इस प्रतिभा के कारण ही उन्हें सरकार की ओर से छात्रवृत्ति मिली तथा उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी लन्दन में प्रवेश ले लिया। महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त तथा क्रान्तिकारियों के आदि गुरु श्यामजीकृष्ण वर्मा का इण्डिया हाऊस क्रान्तिकारियों की शरणस्थली थी। यहाँ हरदयाल जी की भेंट श्यामजीकृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द और वीर सावरकर आदि से हुई। वहाँ जाने से उनके हृदय में भारत की आजादी के भाव प्रबल से प्रबलतर होते चले गए। उन्होंने सशस्त्र क्रान्ति की शपथ ली और ऑक्सफोर्ड जाकर छात्रवृत्ति और छात्रत्व दोनों

www.thearyasamaj.org

से त्यागपत्र दे दिया। उन्हीं दिनों उन्होंने अपनी पत्नी को भी लण्डन बुला लिया और उन्हें भी क्रान्तिकारी बना दिया।

हरदयाल जी को अंग्रेजियत से इतनी अधिक नफरत हो गई कि उन्हें विदेशी वस्त्र पहनना भी एक अपराध लगने लगा और साथियों के लाख समझाने के बावजूद भी उस ठण्डे प्रदेश में, स्वास्थ्य की भी परवाह न करते हुए, वह केवल एक कपड़े में ही रहने लगे। उस हठधर्मी से उन्हें ब्रांकाइटिस की बीमारी हो गई, जिसे उन्होंने प्रारंभ में छुपाए रखा, मगर बाद में उन्हें दवा-दारू लेना जरूरी हो गया। कुछ स्वस्थ हो जाने पर उन्हें पैरिस में डॉक्टर राणा के पास भेज दिया गया। राणा और उनकी जर्मन धर्मपत्नी ने उनकी अच्छी सेवा की, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ, मगर तब भी वह राणा जी की धर्मपत्नी के हाथों से न तो भोजन करते थे और न ही उनसे बात करते थे। इण्डिया हाऊस के अपने साथियों से परामर्श करने के बाद वह भारत में आन्दोलन को प्रभावी ढंग से स्थापित करने के लिए लाहौर लौट आए और वहाँ पर एक आश्रम स्थापित कर युवकों में देशभक्ति और क्रांतिकारी भाव भरने लगे। लाला हनुमन्तसहाय, मास्टर अमीरचन्द, अवध बिहारी तथा भाई बाल मुकुन्द आदि क्रान्तिकारी इसी आश्रम तथा लाल हरदयाल की देन थे। उन्होंने पंजाबी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में 'पंजाबी' नाम से एक समाचार-पत्र भी निकाला। इस समाचार पत्र की भनक अंग्रेज सरकार को भी लग गई और लाला जी के आस-पास गुप्तचरों का जाल बिछ गया, मगर भारत माँ का यह निराला लाल गुप्तचरों की आँखों में धूल झोंककर लाहौर से कोलम्बो और इटली होते हुए फ्रांस पहुँच गया।

फ्रांस की राजधानी पैरिस में पुनः क्रांतिकारी मित्र एकत्रित हो गए। श्यामजीकृष्ण वर्मा, श्रीमती कामा और सावरकर उस समय पेरिस में ही थे। वहाँ पर श्रीमती कामा के क्रांतिकारी समाचार-पत्र 'वन्देमातरम्' के सम्पादक का काम लाला हरदयाल जी को सौंपा गया। इस पत्र के द्वारा हरदयाल जी ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया जिससे सरकार ने गिरफ्तारी के लिए फ्रांस सरकार पर दबाव डालना शुरू कर

www.thearyasamaj.org

दिया। हमारे नायक यहाँ भी अंग्रेजी सरकार के गुप्तचरों को चकमा देकर लन्दन, अल्जीयर्स होते हुए वैस्ट इण्डीज के एक द्वीप में जा पहुँचे। अपने ही कुछ साथियों के शपथ तोड़कर गवाह बन जाने तथा कुछ साथियों की गिरफ्तारी से वह अध्यात्म एवं दर्शन की ओर इस कदर झुके कि एक तरह से अज्ञातवासी हो गए। किसी को कुछ पता नहीं चला कि वह कहाँ चले गये हैं। उन्हें हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, फ्रैंच, फारसी, उर्दू आदि भाषाओं का भी ज्ञान था। उन्होंने सभी भाषाओं के माध्यम से अध्ययन किया और अन्ततः उन्होंने पहले बौद्ध धर्म की शरण में जाने तथा बाद में एक नए समन्वयात्मक धर्म की स्थापना करने का निर्णय लिया। इसी बीच भाई परमानन्द जी सरकार की नजरों से बचने के लिए वैस्ट इण्डीज के इसी मार्टिनिक द्वीप में पहुँच गये तथा लाला हरदयाल जी से उनकी भेंट हुई। भाई परमानन्द जी ने उन्हें कहा कि भारत में पहले ही धार्मिक आचार्यो की कमी नहीं है, मगर वे भारत की स्वतन्त्रता के लिए कुछ प्रयास नहीं कर रहे हैं। अपने जीवन को इस प्रकार से एकाकी और निष्क्रिय बनाने से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होने वाली। उन्होंने उन्हें प्रेरित किया कि वह अपने लेखन और प्रवचन आदि के द्वारा देश-सेवा करें। उनकी प्रेरणा से लाला जी पुनः सक्रिय हो गये। जनवरी, 1911 में भाई परमानन्द तथा लाला हरदयाल अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में जा पहुँचे। सरदार तेजासिंह, तारकनाथ दास, बाबा सोहनसिंह भकना, पं. कांशीराम जैसे क्रान्तिवीर वहाँ पर पहले ही मौजूद थे। अमेरिका के समस्त भारतीयों को इन क्रान्तिकारियों ने संगठित करके उन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। भाई परमानन्द जी ने लाला हरदयाल जी के ओजस्वी प्रवचन सैनफ्रांसिस्को में कराये। उनके भाषणों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उन्हें स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में दर्शन-शास्त्र का प्राध्यापक बना दिया गया। कुछ समय के बाद क्रान्तिकारियों ने 'गदर पार्टी' का गठन किया, जिसके प्रधान सोहन सिंह भकना तथा मन्त्री लाला हरदयाल जी बनाये गये। इस पार्टी ने 'गदर' नाम का एक पत्र भी निकाला। इस पत्र के

www.thearyasamaj.org

माध्यम से क्रान्तिकारियों को अपनी विचारधारा जन साधारण तक पहुँचाने में बहुत सफलता मिली तथा उन्हें धन भी काफी मिलने लगा। लाला जी ने सात भाषाओं में इस पत्र को प्रकाशित कराने की व्यवस्था की तथा उनके प्रयासों से सैनिक छावनियों तक भी 'गदर' के क्रान्तिकारी अंक पहुँचाए जाने लगे। इस प्रकार के समाचार जब अंग्रेजी सरकार तक पहुँचे, तो उसने अमेरिका पर दबाव डालकर उन्हें गिरफ्तार करवाने का आग्रह किया। मगर अमेरिका ने इसे गंभीरता से नहीं लिया, क्योंकि उस समय उसकी नीति तो सैन्य सामग्री बेचकर धन कमाने की ही थी। हाँ! दिखावे भर के लिए लाला जी को गिरफ्तार करने का उपक्रम किया गया, मगर असल में वह उन्हें अमेरिका से सुरक्षित निकल भागने का अवसर देना चाहते थे।

गदर पार्टी ने उन्हें बर्लिन पहुँचाया, जहाँ चम्पक रमण पिल्लै, मु. बरकतुल्ला खाँ, डॉ. प्रभाकर, वीरेन्द्र सरकार, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, भूपेन्द्रनाथ दत्त आदि क्रान्तिकारी पहले से ही कार्यरत थे। लाला हरदयाल जी के पहुँचने से उनमें नया जोश पैदा हो गया। उस समय प्रथम विश्वयुद्ध के बादल छाने लगे थे। उन्हीं दिनों भारत में राजा महेन्द्रप्रताप ने बर्लिन पहुँच कर वहाँ 'आजाद हिन्द सरकार' बना ली। लाला हरदयाल जी इंग्लैण्ड के शत्रु जर्मनी से हाथ मिलाकर कुछ ठोस उपलब्धि प्राप्त करना चाहते थे। उन्हीं के प्रयासों से वार्सा में जर्मनों द्वारा सन्धि-वार्ता के लिए तैयार किये गये प्रारूप में 'भारत की स्वतन्त्रता' की शर्त भी जोड़ी गई थी। जब क्रान्तिकारियों ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए भारत में एक साथ क्रान्ति की योजना बनाई, तो अमेरिका और कनाडा से 'गदर पार्टी' के लोग भी बड़ी संख्या में भारत पहुँचने लगे। जर्मनी से लाला हरदयाल जी ने हथियारों से भरे कई जहाज तथा बहुत सा धन भेजा। भारत में रासबिहारी बोस तथा शचीन्द्र नाथ सन्याल इन हथियारों की प्रतीक्षा कर रहे थे, मगर दुर्भाग्य से सभी जहाज या तो पकड़ लिये गये या डुबो दिये गए। उधर क्रान्तिकारी दल में एक भेदिये के घुस आने से पूरे देश में एक साथ होने वाले विस्फोट का भी भेद खुल गया

www.thearyasamaj.org

और सैकड़ों क्रान्तिकारी पकड़ लिए गए। लाला हरदयाल जी पुनः अध्यात्म दर्शन की ओर मुड़ गये। वह स्वीडन चले गये और कुछ वर्ष बाद जब ब्रिटिश सरकार ने उन पर से सभी प्रतिबंध हटा लिये, तो 1927 में लंदन चले गये। वहाँ उन्होंने दर्शन-शास्त्र में पीएच. डी. की। वह क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए पुनः अनुकूल वातावरण देख रहे थे तथा ज्यों ही उन्हें ऐसी अनुकूलता मिली, वह अमेरिका चले गए।

लाला हरदयाल जी के हृदय में अपनी मातृभूमि के दर्शन करने की तीव्र इच्छा हुई, जिसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व होम कर दिया था। इतना प्रतिभाशाली होने के बावजूद अपना सारा जीवन अभावों और कष्टों में ही बिताया। कहते हैं अभावों के कारण इस महान् विद्वान् एवं आदर्श क्रान्तिकारी ने अपना जीवन अधिकतर उबले हुए आलू और सब्जियाँ खाकर ही गुजारा। भारतमाता के दर्शनों के लिए दो बाधाएँ मार्ग में खड़ी थीं। एक तो ब्रिटिश सरकार की अनुमति तो प्राप्त कर ली गई, मगर आर्थिक अभाव अभी आड़े था। इस बात का पता जब भारत में भाई परमानन्द जी को लगा, तो उन्होंने तुरन्त मनीऑर्डर द्वारा धन भेजा। उस धन की रसीद अपने हाथ में थी और उधर उन्हें इस अमर और आदर्श क्रान्तिकारी के देहावसान का समाचार मिला। बड़ी ही रहस्यमयी परिस्थितियों में 4 मार्च, 1939 को फिलेडेल्फिया (अमेरिका) में इस अमर क्रान्तिकारी का देहावसान हो गया था। माना जाता है कि अंग्रेज गुप्तचरों ने उन्हें ज़हर दे दिया था। आज हम स्वतन्त्र भारत में इस बात की कल्पना तक नहीं कर सकते हैं कि भारत माँ को परतन्त्रता के अभिशाप से मुक्त कराने के लिए हमारे वीर क्रान्तिकारियों ने कितने दुःख सहे और कितने तप और त्याग का जीवन बिताया। स्वतन्त्र भारत में क्रान्तिकारियों की उपेक्षा का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा कि अपने आप को तिल-तिल जलाने वाले इस महामानव का कोई स्मारक तक नहीं बनाया गया है, मगर यह बात भी सत्य है कि बलिदान किसी स्मारक का मुहताज नहीं हुआ करता है।

71/एस-8, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी
हिमाचल प्रदेश-174402

www.thearyasamaj.org

SHRAVANI PARVA AT ARYASAMAJ C-3 BLOCK (Pankha Road), JANAKPURI,NEW DELHI

-B.D.UKHUL

Shravani Parva was held by the Arya Samaj, C-3 Block(Pankha Road) Janakpuri from RAKSHA BANDHAN day to KRISHNA JANMASHTMI (from 21st to 28th August, 2013) and the VEDIC SCHOLAR Dr. NISHTHA VIDYALANKAR delivered Vedic pravachans while Shri UDAYVEERJI from Mathura delivered the Vedic message through his melodious bhajans in the morning and evening sessions well attended by the audience. Yajna was regularly conducted by Dr. Pranavdev ji as its Brahma and the members actively participated in the Agnihotra held in the morning and evening sessions. On the final day the function was held in the newly built hall which accommodated larger audience and gave an impressive look. Pravachan and Bhajans on the life and message of Yogeshwar Shri Krishna got prominence and Shri Vinay Arya,Secretary of Delhi Aryapratinidhi Sabha alongwith Acharya Dharmpalji Arya also participated. Shri Vinay Arya referred to the role of Aryasamaj in the Hyderabad Satyagraha against the Nizam of Hyderabad who acted as an oppressor of all religious activities of Hindus and the Aryasamaj rose to occasion under the leadership of Shri Narayan Swami,President of the Sarvadeshik Aryapratinidhi Sabha led the movement to success after great sacrifices. Shri Vinay Arya called upon the audience to study the works of Sw. Dayanand Saraswati and also the history of the Aryasamaj to know about its contribu-

www.thearyasamaj.org

tion to the social reforms and moulding of eminent freedom fighters and Vedic missionaries in India who took forward the torch lit by Sw. Dayanand Saraswati. He offered substantial discount on the book - History of Aryasamaj by Indra Vidyavachaspati(2 vols.) and several people registered their names to obtain this book. On this day the Aryasamaj also honoured its members who attained the age of 85 yrs. & above, namely, Sarvshri Satyadev Kharbanda, Krishenlal Sabharwal, Chamanlal Mahajan, Ved Prakash Oberoi, Somdutt Mahajan, Smt. Vimla Chopra, Smt.Ram Kali Khurana, Smt. Maya Devi, Smt. Kaushalya Sahni and Smt. Charan Sarin. Mrs.Kaushalya Sahni,Smt.Vimla Chopra and Shri Sabharwal who could not be present were honored at their respective residences on 14th September,2013. Shri Kharbanda delivered a short speech and it may be pertinent to mention here that he has voluntarily undertaken to write on Notice Board situated on the exterior of the Aryasamaj the Inspiring Quotations/Sayings both in English and Hindi since 7th August, 1998 which are read by passersbye with great curiosity. Shri Kharbanda has also a distinction to read VEDIC VINAY all through the year for more than ten times by initialing after each reading- A unique example of Swadhyaya. Shri Somdutt Mahajan another honoured octagenarian has devoted the entire life to serve the Aryasamaj at Kirtinagar and now C3 Janakpuri Aryasamaj and undertook to propagate the Vedic message through publication and distribution of Arsh literature at national and international level. Saral Geeta Gyan authored by Dr. Mahesh Vidyalankar is a unique example of its popularity among all sections of society and has been reprinted/ revised time and again since August, 2001.

On Sunday,i.e.25th August,2013 the Aryasamaj also honoured its Founder Members and the office-bearers/signatories to the papers/constitution submitted for its formal registeration and it was an occasion to accord them recognition for their devoted services. In view of this we are venturing to trace a bit of the history of the growth of this Aryasamaj and remember

www.thearyasamaj.org

the members who had helped to found and nurture this institution for over 4 decades.

A peep into past

Some enthusiasts from C2A(Pkt.15 & 16) and C2C(Pocket 12) decided to organize Yajnas in the Parks say in the parks of C2A, Pocket 12 and C1 Block on Sundays where the main inspirers were ,Ved Shiromani Satyapal Sharma(later Sw. Satyam, President of Sarvdeshik Arya Pratinidhi Sabha), Shri Hargovind Kapoor and Shri Mahinderpal Singh Arya assisted by others. Ist Yajna was organized at the initiative of Dr. Satyapal Sharma in the C2A(Pocket 16) Park on Sunday, the 5th of November,1972 (Deepawali Day/Rishi Nirvan-diwas) in the evening and it was mostly attended by the C2A residents and a few others. A drive to enrol membership of this Aryasamaj started and the Membership records reveal that 24 members (13 from C2A Block and 11 from Pocket 12) got enrolled during January,1973 and duly admitted by countersignatures by the then Secretary Shri M.P.Singh Arya.Block C2A members were: Dr.B.B.Purang Vidyalankar, Smt.Premlata Purang,Dr.Satyapal Sharma, Smt.Sushma Sharma, Shri Raj Gopal Arya, Smt. Sushila Arya,Shri O.P.Gupta, Shri D.D.Mahajan,Shri K.G.Purang,Shri V.D.Sharma,Shri Braham Dutt Ukhul, Shri Chander Dutt Ukhul (Joint Secretary)and Shri A.P. Madan while Pocket 12(C2C Block)members were: Shri Hargovind Kapoor(President), Shri Virender Kapoor, Shri Mahendrapal Singh Arya(Secretary), Smt. Vimla Arya ,Shri Jagdish Mitra(Treasurer), Shri Surjeet Singh,Shri O.P.Sharma,Shri Shiv Kumar Varni, Smt.Shashi Varni, Shri Ranjit Singh Rana and Shri S.M.Dhawan. This gathered momentum and Sunday Yajnas were conducted in the morning hours in various parks of C Block where Shri Kailash Chander(Sahayak) used to bring Yajna material to the earmarked place on a cycle and Shri Chander Dutt Ukhul used to arrange Durries from local tent-houses. They had fixed a Loudspeaker person from Jail Road who provided microphone/loudspeaker as per their requirement and it continued in its initial

www.thearyasamaj.org

period. Membership Enrolment drive continued and on one Sunday Dr. Satyapal Sharma appealed for donations during a Yajna in C2A Park and fund collection drive was launched. It is gathered that this home-to-home collection drive was mainly undertaken by Sarvshiri Hargovind Kapoor, M.P.Singh Arya,Vyasdev Mehta, Gurmukh Rai Duggal. After Shri M.P.S. Arya was posted outside Delhi, Shri R.K. Satija (enrolled as Member in October,1973) assumed his role as Secretary in place of Shri Arya. Shri Satija used to chalk out a schedule of Yajnas in Parks and send information on Card to the members in advance. Thereafter began the conduct of Yajnas in respective homes of the members every Sunday and the *activity got extended to other blocks of Janakpuri.*

Registration, Allotment of Plot, and Construction of Halls, Yajnashala etc.

The registeration papers of the Aryasamaj were submitted under the Registration of Societies Act 1860 and it included names of 13 members, namely, Sarvshri Hargovind Kapoor (President), Shiv Kumar Shastri (Vice-President),Vyasdev Mehta (Vice President),Ramkrishen Satija(Secretary),Gurmukh Rai Duggal(Treasurer), Dr. Satyapal Sharma (Esteemed Member),Bharat Bhushan Purang(Librarian),Ramesh Pratap Budhiraja, Krishen Gopal Purang, Smt.Satyavati Kapoor, Smt.Leelavati Sharma, Smt.Vimla Chopra and Smt.Leelavati Walia and the society got its registration on 24th February,1974. Dr. Satyapal Sharma (C2A/107) finalized the draft Objectives and bye-laws of the Aryasamaj submitted for registeration. Thereafter started efforts for a suitable plot and finally the present site was allotted by the DDA most probably in February, 1977 and a temporary shed was constructed which became the assembly point for morning satsangs of the Aryasamaj and a routine of daily Yajnas etc. got started. S/ Shri Hargovind Kapoor, R. K. Satija, Vyasdev Mehta,Gurmukh Rai, Duggal and Shri R.P.Dham had pursued the land allotment vigorously. Shri Satija repeatedly visited DDA office at Vikas Minar to pusue the land allotment. First Major event on

www.thearyasamaj.org

event on this site was Vedic Katha by Swami Deekshanandji. The activities gained momentum after getting land and finally, on Sunday, the 10th May, 1981 the foundation stone of the present building was laid by Respected Sw. Amarswamiji and it was preceded by Vedic-Katha by Dr. Shiv Kumar Shastri, an illustrious Member of Parliament. During construction of the building S/shri MPSArya (secretary), R.P.Dham (President), Gurmukh Rai (Treasurer), Lal Chand Arya,Sayal, K.K.Batra played active role and the supervisory work of the building construction was undertaken by Shri Vidyasagar Madan and Shri Pratapsinghji Gupt. The new building was inaugrated in September,1986 by a Union Minister of GOI in the presence of Shri Sompal Shastri and it was preceded by Vedic Katha by Prof. Vachaspati Upadhyaya of University of Delhi(later- Vice Chancellor of Lal Bahadur Sanskrit Vidya Peeth). Select Hymns on the walls of hall alongwith their meanings were chosen by Dr. B. B. Purang and their plates were got prepared by Shri P.S. Gupt and Shri S.K. Madan through an artist at Paharganj. Foundation stone of a regular Yajnashala was laid by Swami Sarvanandji Saraswati on Saturday, the Ist of April,1995 in the august presence of the then Chief Minister Shri Madan Lal Khurana, Shri S.K. Chaudhary(C2/134)and other distinguished guests/members. Shri Satyaprakash (Secretary), Shri Raj Tilak Nayar(President) ,Shri H.K.L.Gulati(Treasurer),S/Shri Pratapsingh Gupt,Naresh Puri, S.K.Madan oversaw the construction of the Yajnashala.The Yajnashala was inaugurated By Swami Satyapatiji Parivrajak in late 1997 when Shri S.K.Madan(President), Shri Satya prakash (Secretary)and Shri H.K.L.Gulati(Treasurer) were in office.

Later, an initiative was taken to provide a separate room to serve as an office for the Mahila Wing of the Aryasamaj, Purohit Nivas and Sevaks' accommodation.

The latest expansion of the space was construction of a Hall over the existing structure and this work was initiated by the team comprising Shri S.K.Madan(President),O.P. Gulati(Secretary) and Shri Bhupsingh Saini(Treasurer)and Shri

www.thearyasamaj.org

Vijay Gulati oversaw its construction. Shri Gulati and Shri Ramesh Chander brought marble from Rajastan and this phase entailed an expenditure of about 50 lakhs.The new Hall was inaugurated by Acharya Baldevji, President of Sarvdeshik Arya Pratinidhi Sabha and Mahashaya Dharmpalji (M.D.H.) on 28th April,2013 preceded by Vedic Pravachans by Acharya Raj Singhji, President Delhi Aryapratinidhi Sabha and Bhajans by Smt. Mithilesh Shastri. The office-bearers and other members of the samaj contributed whole-heartedly. A donor for installation of a liift has undertaken this job also.

General

Arya Veerangana Dal was launched by the Aryasamaj on 24th December,2012 and its convenor is Smt. Uma Monga(C2B/92C) and it started from couple of Veeranganas and its number as on date is 35. The girls are from 4th to 12th Standard. They are being groomed in Vedic rituals learning sandhya and yajna mantras, groupsongs and other Veerangana activities. They have competed and won recognition from various quarters. Aryasamaj meets their financial needs and provided them a uniform and several members of the Aryasamaj also lend their helping hand. Girls are also given assistance in their academic work by several voluntary lady members of the Aryasamaj.

Arya Veerdal is also presently working under guidance of Shri Sant Kumar Tomar.

Aryasamaj had the privilege to conduct Sanskrit Classes under the guidance of Shri Bharat Bhushan Vidyalankar who also took regular classes of Brahmasutras, Yogdarshan and Sankhya darshan for a long duration and our members got its benefit by the scholarship of Shri Purang who volunteered himself for this sacred mission. Shri Naresh Chander Puri acted as Convenor for such activities. Recently the samaj completed the reading of the entire Satyarth Prakash (Paropkarini edition) under the able guidance of Acharya Sandeepji(Rojar Gurukul) who used to come from Sonipat twice a week to take Satyarthprakash class and Shri Jaipal Garg acted as its

www.thearyasamaj.org

convenor.

Under the able guidance of Dr. Pranavdev as a Purohit who joined the Aryasamaj on 5th September,1993, the Samaj has continued to follow the daily routines: sandhya/havan/ mantrapath in morning/evening sessions. Shri Pranavdev passed his MA(Sanskrit) and completed his doctorate during his stay and also reads Sanskrit news bulletin on Delhi Doordarshan. Provision of Separate Yajna-kund is also made for the youngsters.

Aryasamaj observed its Silver Jubilee from 16th April, 1998 to 3rd May, 1998 and a Smarika was bought out on this occasion edited by Dr. Shiv Kumar Shastri and Shri Pratapsingh Gupt. Mahila-wing of the Aryasamaj is very active and has been holding its Satsangs every Wednesday and they elect their own team and have been publishing Vedic booklets from time to time. Mrs. Prem Madan wife of Shri S.K.Madan who had deep Puranic background got convinced of the Vedic ideology and is now capable of delivering Vedic pravachans to share her knowledge with others and she also underwent exposure at the Darshan Yog Mahavidyalaya at Rojar.

Presently this samaj has a Membership of 675. The Aryasamaj also gives financial support to various Gurukuls and in the year ending 31st March, 2013, it sent Rs.1.54 lakhs to 13 Gurukuls (The monthly contribution is made by select members of the Aryasamaj and the Aryasamaj adds 25% to this amount and sends it through a cheque to respective gurukuls) AryaSamj runs Homeo clinic (a notable contribution by Talwar Parivar), Ayurvedic clinic, Allopathic clinic (funded by Ailavadi Parivar -Shri Satish Ailavadi) and Physiotherapy centre –A Block constructed by Shri H.L.Malhotra-C3/204 and this was named after the name of his wife Smt. Bala Malhotra and inaugurated on 2nd September, 2010,

A noteworthy initiative by the Aryasamaj has been to provide a foothold to Swami Satyapatiji of Rojar Gurukul(Darshan Yog Mahavidyalaya) who had resolved to found this institution and the maiden batch of 12 Brahmcharis of this gurukul was sent

www.thearyasamaj.org

off from this Samaj in 1982/83 with commitment to meet their initial financial needs for one year .S/Shri Vyasdev Mehta, Pratapsingh Gupt, Satyaprakash and the entire Executive Committee of the Aryasamaj supported this noble venture and takes pride in this regard.

Shri S.K. Madan and Shri Naresh Chandra Puri literally give shatansh to the Samaj. Shri Madan is known for his knack to raise funds for the Aryasamaj on various occasions. Shri Vyasdev Mehta was also known as a great fund raiser for the Aryasamaj besides collecting funds for Bharat Vikas Parishad and a Vedic Gurukul founded by Sw. Maneeshwarananda in Najafgarh.

It may be pertinent to mention that Shri Mohanlal Vashisht(C2A/13) a member of this Aryasamaj took voluntary retirement from Government service and took to *adhyatmik path* and now is known as Vashisht muni. A unique example of following Vedic way of life, This Samaj can boast of its multifarious activities but there is much to be done to accomplish the mission and having sufficient space and means like a small library (named after Shri Balkrishna Akinchan), a Projection apparatus, Youthwings, medical clinics etc.,it should focus on prachar and propagate the ideology of the Aryasamaj through thoughtful modes to mould the future generation. All members of the samaj should give a serious thinking to initiate their family members,children in particular and acquaintances to converge to the ancient glorious Vedic ideology of our motherland Bharat/Aryavart. Let us derive inspiration from our predecessors/fore-runners. Now in internet age, our youth should be encouraged to go on Vedic websites to learn and interact. Shri Sanjeev Newar of Janakpuri has devised a website www. Satyavidya.com and Shri Anupam was a pioneer to launch a website know as www.aryasamaj.org Now there are many such website which can be explored.

www.thearyasamaj.org

विनम्र अनुरोध

ब्रह्मार्पण को आरंभ किए छह वर्ष से अधिक हो गए हैं। आपके सहयोग और प्रेरणादायक सुझावों से हम इसे और अधिक सुचारु रूप में प्रस्तुत कर सके हैं। इसके लिए हम आपके आभारी हैं। आशा है आप हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण आदर्शों तथा ऋषि-मुनियों द्वारा प्रणीत वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, गीता आदि में प्रतिपादित नैतिक जीवन मूल्यों के प्रचार में अपना योगदान देते रहेंगे। हमारे कुछ माननीय सदस्यों का अंशदान अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। उनसे नम्र निवेदन है कि वे अपना आगामी वर्ष का अंशदान शीघ्र श्री ब्रह्मदत्त उक्खल, सी-2ए 15/58, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058 को भेजने की कृपा करें।

संपादक

Words of Wisdom

- There is no beauty but the beauty of action.
- Don't ask for a light load, but rather ask for a strong back.
- Accomplishment of purpose is better than making a profit.
- The best motivation always comes from within.
- You must motivate yourself everyday.
- Winning isn't everything, but wanting to win is.
- You teach best what you most need to learn.
- A child miseducated is a child lost.
- We cannot hold a torch to light another's path without brightening our own.
- To teach is to learn twice over.
- Work is love made visible.
- Whoever wants to reach a distant goal must take small steps.
- Follow you honest convictions, and stay strong.
- Success is the progressive realization of a worthy goal or deal.
- Knowing yourself is the beginning of all wisdom.
- Who dares to teach must never cease to learn.
- Goals determine what you're going to be.
- Great minds have purposes, others have dreams.
- By losing your goal, you have lost your way.
- Try not to become a man of success but a man of value.

www.thearyasamaj.org

RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2011-2013

परित्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश।। यजु. 32/11।।
ऋषि – स्वयंभुब्रह्म, देवता–परमात्मा, छन्द–त्रिष्टुप्

अर्थ – वह परमेश्वर भूतों, आकाश और प्रकृति से लेकर पृथिवी पर्यन्त संपूर्ण, संसार में व्याप्त है। उसके बिना कोई लोक, पूर्वादि दिशा और ऐशान आदि उपदिशा, ऊपर, नीचे, एक भी कण उससे खाली नहीं है। 'प्रथमजाम्' प्रथम उत्पन्न जीव अपनी आत्मा से सत्याचरण, विद्या, श्रद्धा, भक्ति से 'ऋतस्य' यथार्थ सत्यस्वरूप परमात्मा को 'उपस्थाय' अपने निकट जानकर तथा 'अभिसंविवेश' उसके अभिमुख होकर अपनी आत्मा से 'आत्मानम्' परमात्मा में ध्यानस्थ होकर सब दुःखों से छूटकर सदैव परमानन्द में रहता है।

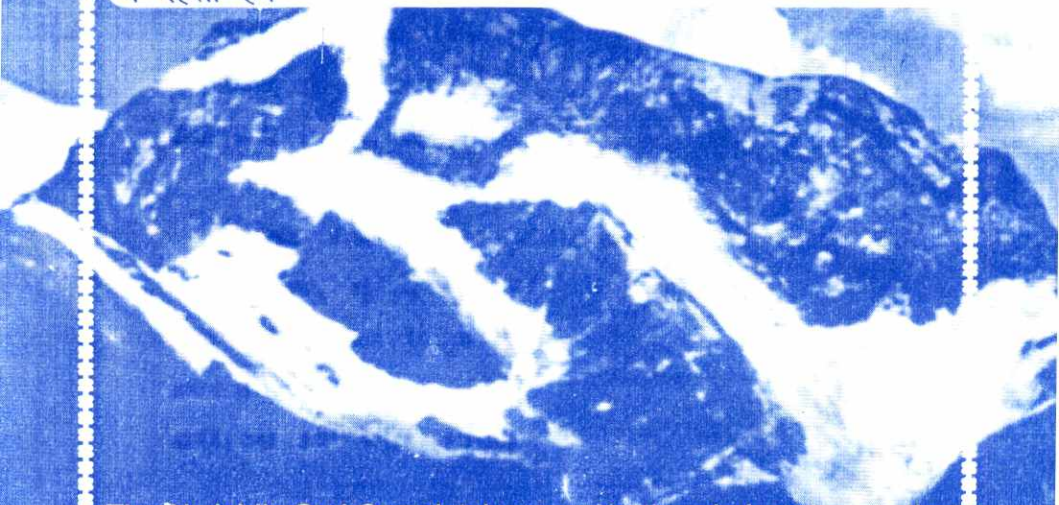

The Almightly God Completely pervades the whole universe, the primordial matter and the great elements including space and the earth. He permeates all the planets and is present every where, in all directions. He is above and below all round us. The first creation, i.e., the embodied soul by observing truthfulness and acquiring true knowledge and practicing devotion to him, feel him face to face. They thus, by entering into the Being of the God who is the Highest Bliss by His Nature, get rid of all miseries and always remain in the enjoyment of the Supreme Bliss of the company of the Supreme Being.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58